ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 435-436
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

दक्षिण भारतीय इतिहास में : संगम साहित्य

राजु कुमार
शोधअध्येता, प्राचीन भारतीय एवं एशियाई अध्ययन, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत।

Received- 14.11.2019, Revised- 16.11.2019, Accepted - 17.11.2019 E-mail: - drbrajeshkumarpandey@gmail.com

सारांश : **दक्षिण भारतीय इतिहास का क्रमबद्ध इतिहासह में जिस साहित्य से ज्ञात होता है, वह है 'संगम साहित्य'। इसके पूर्व में हमें कोई भी महत्वपुर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ हमें दक्षिण भारत से प्राप्त नहीं होता है। दक्षिण भारत के प्रारम्भिक इतिहास का मुख्य साधन संगम साहित्य ही है। 'संगम' शब्द का अर्थ परिषद् अथवा गोष्ठी होता है। जिनमें तमिल कवि एवं विद्वान एकत्रित होते थे। प्रत्येक कवि अथवा लेखक अपनी रचनाओं को संगम के समक्ष प्रस्तुत करता था तथा इसकी स्वीकृति प्राप्त हो जाने के बाद ही किसी भी रचना का प्रकाशन संभव था। परम्परा के अनुसार अति प्राचीन में पाण्डय राजाओं के संरक्षण में कुल तीन संगम आयोजित किया गया।**

कुंजीभूत शब्द– क्रमबद्ध, साहित्य, संगम साहित्य, ऐतिहासिक, परिषद्, गोष्ठी, रचनाओं, स्वीकृति, प्रकाशन, अनुसार।

तमिल दक्षिण भारत का बोली जाने वाला साहित्यि कि भाषाओं में सबसे प्राचीन भाषा है। संगम साहित्य की विशेषता गीतकाव्य, प्रगीतों और ग्राम–काव्य कावि पुल भंडार मिलता है।

प्रथमसंगम– इसका आयोजन पाण्डयों की प्राचीन राजधानी मदुरा (जो अब समुद्र में विलीन हो गयी है) में हुआ था। इसकी अध्यक्षता अगस्त ऋषि ने की। इन्हीं को दक्षिण में आर्य सभ्यता के प्रचार का श्रेय प्रदान किया जाता है। इस संगम में कुल 549 सदस्य सम्मिलित हुए। 4,499 लेखकों ने इसमें अपनी रचनायें प्रस्तुत करके उनके प्रकाशन की अनुमति प्राप्त किया। यह संगम, जिसे पाण्ड्य वंश के 89 राजाओं ने संरक्षण प्रदान किया था, चार हजार चार सौ वर्षों तक चला। इस संगम द्वारा संकलित महत्वपूर्ण ग्रन्थ अकट्टियम् (अगस्त्यम्) परिपदाल, मुदुनारै, मुदुकुरूक ुतथा कलरिआविरैथे। दुर्भाग्यवश इनमें से कोई भी सम्प्रति उपलब्ध नहीं है।

द्वितीय संगम– इसका आयोजन कपाटपुरम् (अलैवाई) में किया गया। इसकी अध्यक्षता का श्रेय भी अगस्त्य को ही दिया गया है। इसमें कुल 49 सदस्य सम्मिलित हुए, तथा 59 पाण्ड्य शासकों को इसे संरक्षण मिला। परम्परा के अनुसार 3700 कवियों ने यहाँ अपनी रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति प्राप्त की तथा यह संगम इतनी अवधि तक अवाध गति से चलता रहा। इस संगम द्वारा संकलित ग्रन्थों में एकमात्र 'तोल्काप्पियम्' ही अवशिष्ट है। यह तमिल व्याकरण का ग्रन्थ है जिसकी रचना का श्रेय अगस्त्य ऋषि के शिष्य तोल्काप्पियर को दिया जाता है। ऐसी मान्यता है कि प्राचीन मदुरा के समान द्वितीय संगम के केन्द्र कपाट पुरम भी समुद्र में विलीन हो गया।

तृतीय संगम– प्रायः यह स्वीकार किया जाता है कि पाण्ड्य राजाओं की राजधानी मदुरा में एक संगम आयोजित किया गया था और यह तीसरा संगम था। इसमें संकलित कवितायें आज भी उपलब्ध हैं। इनकी संख्या 49 थी तथा इसने 449 कवियों को उनकी रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति प्रदान किया। यह संगम, जिसे 49 पाण्ड्य राजाओं का सरंक्षण मिला, 1,850 वर्षों तक चलता रहा। इसकी अध्यक्षता नक्कीरर ने की थी। इस संगम द्वारा संकलित उत्कृष्ट रचनायेंने दुन्थोकै, कुरून्थोकै, नत्रिनई, एन्कुरून्नूरू, पदित्रुप्पट, नूत्रैम्बधु, परि–पादल, कूथु, वरि, पेरिसै तथा सित्रिसै हैं। यद्यपि इनमें से अधिकांश ग्रन्थ नष्ट हो गये है फिर भी आज जो भी तमिल साहित्य बचा हुआ है, वह इसी संगम से सम्बन्धित है। तोल्काप्पियम् सहित तीसरे संगम के अवशिष्ट सभी ग्रन्थों को सम्पादन तिन्नवेल्ली की 'साउथ इण्डिया शैव सिद्धान्त पब्लिशिंग सोसायटी' के द्वारा किया गया है।

उपलब्ध संगम साहित्य का विभाजन तीन भागों में किया जा सकता है– (1) पत्थप्पात्तु (2) इत्थुथोकैतथा (3) पदिनेनकीलकन्कु।

'पत्थुप्पातु' दस संक्षिप्त पदों का संग्रह है। इनके नाम हैं–तिरूमुरूगात्रुप्पदै, पोरूनरर्रूप्पदै, शिरूमानारर्रूप्पदै, पेरूम्वानारूप्पदै, मुल्लैप्पाट्ट, मदुरैक्कांची, नेडुनलवाडै, कुरिंजिपाट्ट, पट्टिनपालै तथा मलैपडुहकाद्रम। इनमें दो नक्कीरर, दो रूद्रनकन्ननार तथा वाद के छः पद क्रमशः मरूथनार, कन्नियार, नत्थप्यनार, नप्पूथनार, कपिलर और कौसिकनार नामक कवियों द्वारा विरचित हैं। इन पदों में चोल शासक करिकाल तथा पाण्ड्य शासक ने दुज्जोलियन के विवरण भी मिलते है। इन पदों का समय द्वितीय शती ईस्वी के लगभग का है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

'इत्थथोकै' में आठ कवितायें हैं। नर्णिर (नत्रिगै), ऐगुरूनूरू, पदिर्रूप्पत्तु, परिपाडल, कलितोगै, अहनानूर तथा पुरनानूरू। इनमें संगम युगीन राजाओं की नामावली के साथ–साथ उस समय के जन–जीवन एवं आचार–विचार का विवरण भी प्राप्त होता है। ये प्राचीनतम तमिल साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचनायें हैं। इनमेंकुल 2279 से भी अधिक कवितायें है जो 473 कवियों द्वारा विरचित हैं। 'पदिनेन की लकन्क्कु' में अठारह लघु कविताओं का संग्रह है जो सभी उपदेशात्मक है। नालउि, नान्मणिक्कडिगै, इन्नार्नापदु, इनियनार्पदु, कारनार्पदु, कलविलनार्पदु ऐन्तिगैएम्पदु, ऐन्दिणैएम्वदु, तिणैमालैएम्बदु, तिणैमालैनीनरैम्बदु, कैन्निलै, कूरल, तिरिकडुकम, आशारक्कावै, पलमोलि, शिरूमंचमुलम्, मुदुमोलिक्काजि तथा एलादि। इनमें तिरूवल्लुवर का 'कुराल' सर्वोत्कृष्ट है। इसे तमिल साहित्य का एक आधारभुत ग्रन्थ बताया जाता है। इसके विषय त्रिवर्ग, आचारशास्त्र, राजनीति, आर्थिक जीवन एवं प्रणय से संबंधित हैं। इसका रचयिता कौटिल्य, मनु, कात्यायन आदि के विचारों से प्रभावित लगता है। इसमें कुल 133 खण्ड हैं। नीलकण्ड शास्त्री इसे ईस्वी सन् की पांचवी शताब्दी में रखते है।

संगम युग में महाकाव्यों की भी रचना की गयी। यद्यपि ये ग्रन्थ संगम साहित्य के अन्तर्गत नहीं आते तथा पितइन से तत्कालीन जन–जीवन के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त हो जाती है। इस काल के पाँचय प्रसिद्ध महाकाव्य हैं–शिल्प्पदिकारम्, मणिमेखले, जीवकचिन्तामणि, वलयपति तथा कुण्डलकेशि। इनमेंप्रथम तीन ही उपलब्ध इनका विवरण इसप्रकार है–

दक्षिण भारतीय इतिहास को समझने के लिए 'संगमसाहित्य' के बिना समझ पाना संभव नहीं है। 'संगम साहित्य' मूलतः तमिल और आर्य दो भिन्न संस्कृतियों के परस्पर योग से विकसित हुआ। दखिण भारत की जानकारी तथा दक्षिण भारत के विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुए प्राचीन रोमन साम्राज्य के असंख्य सिक्कों के बीच अनुरूपता मिलती है। अन्ततः हम कह सकते है कि 'संगम साहित्य' प्रारम्भिक दक्षिण भारतीय इतिहास को जानने के लिए सर्वोत्तम ग्रंथ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. के0 सी0 श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास, यूनाईटेडबुकडिपों, इलाहाबाद।
2. वी0 के अग्निहोत्री, भारतीय इतिहास, ऍलाइड पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 2009
3. एस0 के0 पाण्डे प्राचीन भारत, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद।
4. वी.0 डी0 महाजन, प्राचीन भारत का इतिहास, एस0 चन्द एंडकम्पनी लि0, नईदिल्ली।
5. झा एवं श्रीमति, प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय।
6. मजुमदार, राय चौधरी, दत्त, भारतकावृहतइतिहास, मैकमिलन इण्डिया लिमिटेड दिल्ली।
7. एस0 के0 पाण्डेय, प्राचीन भारत, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यटर्श इलाहाबाद, 2014

*****